बेटी | by Shivam Sharma

एक लड़की का घर नहीं होता, होता पीहर सासरिया
तेरे दर को ही घर माना मैंने अपना साँविरया

जिनसे जनम मिला है मुझको वो ही पराया कहते हैं
एक लड़की के भाग्य में बाबा क्यों इतने दु:ख रहते हैं
मैंने सुना बेटो से ज़्यादा पिता को प्यारी बेटियां
तेरे दर को ही घर माना मैंने अपना साँविरया

छोड़ दिया बाबुल का अंगना साजन का घर अपनाया
कौन है मेरा क्या है मेरा समझ नहीं कुछ भी आया
दो घर देकर भी तूने क्यों एक घर ना मुझको दिया
तेरे दर को ही घर माना मैंने अपना साँविरया

और किसी से कह नहीं पाऊं तुमसे दिल की कहती हूँ
तुमको तो मालूम है बाबा मैं जिस हाल में रहती हूँ
कहे सचिन बेटी ने हंस के सारे ग़म को सेह लिया
तेरे दर को ही घर माना मैंने अपना साँविरया

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ac%e0%a5%87%e0%a4%9f%e0%a5%80-by-shivam-sharma/